

इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य

स्वर्णिम अरुणोदय की रूपरेखा —
महाक्रान्ति और युगसन्धि का विज्ञान

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा
आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

Step 1:
**विभीषिकाओं का
अन्धकार** (लक्षण)
२०वीं सदी के
अभूतपूर्व संकट।



Step 2:
मानवी दुर्बुद्धि
(मूल कारण)
कर्मफल में विलम्ब और
अदूरदर्शिता का कुचक्र।



Step 4:
महाक्रान्ति
(समाधान)
सृजन और सन्तुलन का
१०० वर्षीय महाअभियान।



Step 3:
निराशा का निवारण
(मनोवैज्ञानिक औषधि)
इतिहास के पन्नों से
आशा का संचार।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सें कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



Architecture of Dawn

मीडिया

'Time' Magazine (२ जनवरी १९८९) – पृथ्वी को 'Planet of the Year' (Endangered Earth) घोषित किया।

भविष्यवेत्ता

एल्विन टॉफ्लर ('Future Shock') – 'गलती मनुष्य ने ही की, आपत्तियों को उसी ने न्यौत बुलाया।'।

विज्ञान

डॉ. एडगर मिचैल (NASA) – 'भविष्य कथन अब विज्ञान है। जैसा हम आज सोचते-करते हैं वही हमारा भविष्य बन जाता है। आने वाले वर्ष नवयुग के अरुणोदय काल के होंगे।'।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी मे से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अन्धाधुन्ध औद्योगीकरण



नदियों और वायु का
प्रदूषण / वनों का विनाश



ध्रुवों का पिघलना /
बाढ़ / सूखा

अन्तरिक्ष का तापमान बढ़ना



‘ओजोन’ कवच का टूटना



ब्रह्माण्डीय किरणों और
वायरसों का धरातल पर आना

अणु-आयुधों की दौड़



आणविक विकिरण का संकट
(उदा. चेर्नोबिल रिएक्टर)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगव्रत वेदभूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

समस्या का मूल कारण — ‘मानवी दुर्बुद्धि’। जब विवेकशीलता की उपेक्षा होती है, तो मनुष्य अपनी गरिमा भूलकर स्वार्थ के कुचक्र में फँस जाता है।



Architecture of Dawn

कर्मफल का विज्ञान: बीज को वृक्ष बनने में और दूध को दही बनने में समय लगता है। यदि झूठ बोलते ही मुँह में छाले पड़ जाते या चोरी करते ही लकवा मार जाता, तो कोई अनर्थ न करता। ईश्वर ने यह विलम्ब मनुष्य के विवेक की परीक्षा के लिए रखा है।

प्रतिक्रिया
(Delayed
Consequence) -
प्राकृतिक दण्ड या
पुरस्कार की प्राप्ति।

क्रिया (Action)
- अनुचित या उचित
कर्म का आरम्भ।

Activation Curve



(T=0)

भ्रम का समय (Doubt Period) - प्रतिक्रिया में विलम्ब।
(नास्तिक स्तर का अविश्वास पनपता है कि कोई दण्ड नहीं मिलेगा)।

(T=1)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

संकीर्ण स्वार्थपरता (Narrow Individualism)

केवल अपना लाभ सूझना

दूसरों का शोषण, अनाचार,
और उत्पीड़न

प्रामाणिकता का नष्ट होना, एकाकीपन
और डरावना जीवन



दृष्टिकोण

व्यवहार

परिणाम

आत्मवत् सर्व भूतेषु (Universal Empathy)

प्राणी मात्र में अपनी ही आत्मा को देखना

दुःखों को बाँट लेना और सेवा-सहायता
के लिए दौड़ पड़ना

आत्म-विकास और महानता की प्राप्ति

निराशा का
प्रवेश

हार और
थकान की
स्वीकृति

शक्ति और
मनोबल का
अपहरण

सृजनात्मक
कार्यों में
असमर्थता

निराशा एक घुन की तरह है। यह मजबूत शहतीर को भी खोखला कर देती है।
निराशा हर स्थिति में हटे, क्योंकि यह व्यक्ति को समर्थ होते हुए भी
उज्ज्वल भविष्य की संरचना हेतु पंगु बना देती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिमाहित्य के रूप में
आपका शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव धुमऋषि वेदमूर्ति पपोषिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

इतिहास गवाह है कि जब जनमानस में आशा और विश्वास की ज्योति जलाई जाती है, तो असम्भव दिखने वाले परिवर्तन भी महाक्रान्ति का रूप ले लेते हैं।

आधुनिक काल - जोन ऑफ आर्क और गाँधी जी — स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

इतिहास काल - बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन — लाखों भिक्षुओं द्वारा विचारक्रान्ति।

कृष्ण युग - गोवर्धन लीला — ग्वाल-बालों का लाठियों के सहारे असम्भव को सम्भव करना।

राम युग - हनुमान का नेतृत्व — रीछ-वानरों द्वारा लंका दमन का अदम्य विश्वास।

Spark to Flame

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

ईश्वरीय इच्छा का ज्ञान

उज्ज्वल भविष्य की
सुनिश्चित सम्भावना

अवांछनीयता का त्याग और
औचित्य की स्थापना

स्वर्णिम युग
का उदय

यह कोई किंवदन्ती नहीं है। तर्क, तथ्य और महाकाल की प्रेरणा के आधार पर जब यह विश्वास जन-जन में जमेगा कि जीत 'सृजन' की ही होगी, तब लोग स्वयं अनुचित को छोड़कर उचित को अपनाएंगे।

“

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

”



महाक्रान्तियाँ केवल छिटपुट उलट-पुलट नहीं हैं। वे चिरकाल तक जनमानस पर प्रभाव डालती हैं। यह सृजन और सन्तुलन का वह प्रचण्ड प्रवाह है जो लगभग सौ वर्षों में अपनी समग्र रूपरेखा स्पष्ट करता है।

ये क्रान्तियाँ रेलगाड़ी के डिब्बों की तरह एक के पीछे एक दौड़ती चली आ रही हैं, जो महाकाल के संकल्प को प्रमाणित करती हैं।

अहंकारियों का पतन
(दो विश्व युद्धों ने सिद्ध किया कि विनाशकारी शक्तियाँ कभी टिक नहीं सकतीं)।

राजनैतिक पराधीनता का अन्त
(भारत और अफ्रीका में उपनिवेशवाद का खात्मा)।

वसन्त पंचमी
१९९० को
वन्दनीया
माताजी से —

दास प्रथा और जमींदारी का उन्मूलन
(सदियों पुरानी अमानवीय प्रथाओं का तेजी से उखड़ना)।

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में ही चाहिए और आप ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

समानता का उदय
(‘नर और नारी एक समान’, ‘जाति वंश सब एक समान’ की विश्वव्यापी स्वीकृति)।

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ
पण्डित
श्रीराम शर्मा
आचार्य

नीति बनाम अनीति का घमासान युद्ध



अनीति
(Immorality)

औचित्य
(Mahakal's Flow)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

वर्तमान में बिगाड़ अधिक दीखता है और सुधार धीमा।

जैसे अखाड़े में लड़ते दो पहलवानों के बीच उड़ती धूल में हार-जीत स्पष्ट नहीं होती।

परन्तु प्रवाह की दिशा ऊर्ध्वगामी है।
विजय सत्य की ही होनी है।
उज्ज्वल भविष्य का दिनमान उदय होकर ही रहना है।

असन्तुलन को सन्तुलन में बदलने के लिए
जब महाक्रान्तियाँ उभरती हैं, तो उनका
परिणाम अभ्युदय के रूप में ही होता है।
विश्वास रखें, हम शान्ति और प्रगति के
लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

विभीषिका
और दुर्बुद्धि

निराशा का अन्त और
महाक्रान्ति का आरम्भ

इक्कीसवीं सदी
का उज्ज्वल भविष्य

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचाना ही सौर अन-जन
के बीच मेरे पहुँचाना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य